वर्षा ऋतु के राग

पाठकवर ,

आजकल बारिश का मौसम चल रहा है| हिंदुस्थानी संगीत में इस ऋतु के लिए कुछ विशेष रागों का विधान है| इन्हें मौसमी राग कहा जाता है| अन्य ऋतुओं में ये राग उनके नियत समय पर ही गाये जाते हैं, किन्तु वर्षा के मौसम में उन्हें कभी भी - दिन के किसी भी प्रहर में गाया जा सकता है| मल्हार राग इन रागों के क्रम में सबसे पहले आता है|

मिया मल्हार

इस राग को मिया मल्हार या केवल मल्हार नाम से जाना जाता है| इस राग में गंधार कोमल है तथा निषाद के दोनों रूप लिए जाते हैं|यहाँ हमारे संगीत अर्थात उत्तर हिंदुस्थानी संगीत पद्धति में श्रुतियों की जो खासियत है, उसकी ओर थोड़ा ध्यान देना होगा| गंधार तो तोड़ी राग में भी कोमल होता है और मल्हार में भी कोमल ही लगता है; किन्तु तोड़ी का गंधार कुछ उतरा होता है जबकि मल्हार के गंधार में मध्यम का कण या स्पर्श होता है| इससे वह कुछ चढा होता है और मल्हार में हमेशा उसे चढ़ा ही प्रयुक्त किया जाता है| इसी प्रकार निषाद के दो रूपों के बारे में भी एक विशेष बरता जाता है| आरोह में ऊपर जाते समय पहले कोमल निषाद को लेते हैं, उसके पश्चात आन्दोलन पूर्वक शुद्ध धैवत के साथ शुद्ध निषाद लेते हुए तार षड्ज लगाया जाता है| अवरोह में क्रम इसके विपरीत होता है -- अर्थात तार षड्ज के बाद पहले शुद्ध निषाद , फिर धैवत लगाकर कोमल निषाद लेना और म प -- ये स्वरावली लेना यह रीति रहती है| मध्यम को आरोह में वर्जित किया जाता है, अत: आरोह षाडव है एवं अवरोह में वक्र रूप से सभी स्वर होने से वह सम्पूर्ण है| राग का अंग काफी है और थाट भी काफी है| वादी -संवादी के बारे में दो मत हैं -- पंचम-षड्ज और मध्यम -षड्ज| तीसरा मत है कि षड्ज-पंचम वादी -संवादी माने जाएँ| किन्तु राग के न्यास स्थान देखते हुए पंचम-षड्ज वादी-संवादी मानना उचित है| वर्षा ऋतु के अलावा अन्य समय में मध्य रात्रि को गान समय माना जाता है| दरबारी कानड़ा सर्वाधिक समीपवर्ती राग में स्वरों कि दृष्टि से, किन्तु उसमे गंधार उतरा लगता है| साथ ही दरबारी में केवल कोमल निषाद प्रयुक्त होता है| एक पास का राग है- बहार, उससे बचने के लिए आरोह में और अवरोह में दोनों निषादों को लगातार एकसाथ लगाते रहना चाहिए| वर्षा ऋतु के वर्णन बंदिशों में अधिकतर पाए जाते हैं| वियोग श्रृंगार के लिए उपयुक्त राग है| तानों में सारंग अंग देख पडता है और दोनो निषाद एकसाथ लगाना तानों में सम्भव नही होता| मम रेसा या गम रेसा या रेप मप गम रेसा इस प्रकार तानों के अंत में लिया जाता है|

बहार

यह राग भी मौसमी राग है| काफी थाट का राग है और काफी अंग से ही गाया जाता है| गंधार कोमल और दोनों निषाद लगते हैं| रात का तीसरा प्रहर गानसमय है किन्तु मौसमी राग होने से बारिश की ऋतु में कभी भी गाया जा सकता है| इसे कानडा और बागेश्री के मेल से बना राग माना जाता है| आरोह में रिषभ वर्जित है, अवरोह में धैवत वर्जित है| अवरोह में गंधार वक्र रूप से आता है| अत:राग की जाति षाडव - षाडव मानी जा सकती है| किन्तु धैवत भी अवरोह में वक्र रूप में आता है, इस कारण अवरोह को वक्र सम्पूर्ण माना जा सकता है| उस स्थिति में राग की जाति षाडव -सम्पूर्ण माननना भी सही है| अधिकतर कोमल निषाद और कभी कभी शुद्ध निषाद ऐसे रहता है| मध्यम, धैवत की संगति मीठी लगती है| इस की विशेषता यह है की अन्य रागों के साथ इसका मिश्रण बहुत आसानी से होजाता है, जैसे -- बसंत बहार, भैरव बहार, कानडा बहार, बागेश्री बहार इत्यादि| तार सप्तक का प्रयोग अधिक होता है, तानों की प्रधानता रहती है| यह एक चंचल स्वभाव का राग है तथा बहुत लोकप्रिय है| सासाममपमगम नीनी पम गमरेसा इस प्रकार से तान का चलन होता है| इस उत्तरांग प्रधान राग के वादी-सम्वादी म-सा हैं|

बसंत

यह भी मौसमी राग है| पूर्वी थाट का राग है| रिषभ,धैवत कोमल और दोनों मध्यम लगते हैं| गान समय रात्रि का अंतिम प्रहर है किन्तु वर्षा ऋतु में कभी भी गाया जाता है| उत्तरांग की प्रधानता रहती है और वादी संवादी तार षड्ज और मध्य पंचम हैं| निकटवर्ती राग परज से बचने के लिए आरोह में पंचम वर्जित रखना ठीक है| गीतों में बसंत ऋतु का वर्णन होता है| परज की तुलना में इसकी गति मंद और गम्भीर है| शुद्ध मध्यम का स्थान राग की शोभा बढाने के लिए ही है, किन्तु ललित के समान उसी अंग से दोनों मध्यम दिखाकर प्रसन्नता बढाई जाति है| सोहनी, परज और ललित पास के राग हैं|

बसंत का विस्तार मन्द्र सप्तक में नही करना चाहिए अन्यथा पूरिया की छटा दीख पडती है| पूरिया में शुद्ध धैवत है फिर भी बसंत का विस्तार मध्य तथा तार सप्तक में ही करना चाहिए| साम $ ग इतना ही और इस प्रकार से ही शुद्ध म लिया जाता है|

आगे कुछ और रागों के विषय में विचार करेंगे |

Rainy season (Varsha Rutu) Raagas

Dear readers,

Currently, it is monsoon season. In Hindusthani music, there is a special term for ragas of this season. These are called Mausami Raagas (seasonal raagas). In other seasons, these ragas are sung at specific times, but in rainy season, they are sung at any time of the day. Raag Malhaar is the first one in sequence of Mausami Raagas.

Miyan Malhaar

This raag is recognized as 'Miyan Malhaar' or only 'Malhaar'. In this raag, Gandhar is komal and both Ni are included. Now, here we have to throw a light on 'Shrutis' which is a special feature of our North Indian Classical Music.

Gandhar is komal in Todi as well, but Gandhar of Todi is lower than normal komal Gandhaar , however, Gandhar of Malhaar has a touch of Madhyam. It makes it little higher than normal komal Gandhaar and Gandhar in Malhaar is more towards ascending side than normal komal Gandhar. Similarly, something special is also said about two forms of Nishaad. In aaroh, while going ascending, first komal Nishaad is sung and later with the andolan(support) of Shuddha Dhaivat, Shuddha Nishaad is sung and finally Taar Shadaj. In Avaroh, the sequence is opposite – Taar Shadaj in the beginning followed by Dhaivat with Shuddha Nishaad followed by M P. This is the method. Madhyam is varjit (avoided) in aaroh, therefore aaroh is Shadav and being all swars though with vakra chalan in avaroh, it becomes Sampoorna. This raag is of Kaaphi ang and also belongs to Kaphi Thaat. There are differences of opinions regarding Vadi-Sanvaadi; Pancham-Shadaj or Madhyam-Shadaj. The third opinion is that Shadaj-Pancham should be considered as Vadi-Sanvaadi, but considering the Nyaas swar in the raag, it is more appropriate to have Pancham-Shadaj as Vadi-Sanvaadi. Other than Varsha Rutu (Monsoon season), midnight is considered as the ganasamay (appropriate time of singing) of this raag. Raag Darbari Kaanada is the closest raag considering swar combination, but Ga is lower (than normal komal Ga) in it. Also only komal Nishaad is used in Darbaari. Another close raag is raag Bahaar. To differentiate from this raag, both Nishaads should be sung consecutively in both aaroh and avaroh. The description of Varsha Rutu is found mostly in Bandishes (songs).This raag is useful to express the emotions like disconnection (separation) and romance. Saarang ang is observed in taans and it is not possible to sing both Nishaads together in taans. MM RS, GM RS or RP MP GM RS is sung at the end of the taans.

Bahar

This raag is also seasonal raag. Thaat of the raag is Kaaphi and also it is sung by Kaaphi ang. Gandhar is komal and it has 2 Nishaads. Ganasamay is 3rd part of night, but being a seasonal raag, it can be sung at any time in monsoon season. This raag is considered to be a combination of raag Kaanada and raag Bageshri. Rishabh is varjit in aaroh and Dhaivat is varjit in avaroh. Gandhar is in vakra(disarranged) form in avaroh. Therefore, jaati of the raag can be considered as Shaadav-Shaadav, but Dhaivat is also in vakra form in avaroh, therefore, avaroh can be considered as Vakra Sampoorna. In that case, considering jaati of the raag as Shadav-Sampoorna is also appropriate. Mostly komal Nishaad and sometimes shuddha Nishaad exists. The combination of Madhyam and Dhaivat sounds sweet. The specialty of this raag is, it mixes with other raagas very easily. E.g. Basant-Bahaar, Bhairav-Bahaar, Kaanada-Bahaar, Bageshri-Bahaar, etc. Taar saptak

is used more often. There is primacy of taans. This raag is versatile in nature and so it is more popular. SSMMPMGMNNPMGMRS is the chalan of the taan. This raag is uttarangpradhan and it's Vadi-Sanvaadi are M and Sa.

Basant

This is also a seasonal raag. Thaat is Poorvi. Rishabh, Dhaivat komal and both Madhyams are present in the raag. Ganasamay is last part of night, but can be sung at any time in Varsha Rutu. Uttrang is more prime and vaadi-sanvadi are Taar Shadaj and Madhya Pancham. To differentiate from the closer raag Paraj, Pancham swar should be omitted in Aaroh. There is a description of Basant Rutu in the songs of this raag. As compared to raag Paraj, laya (speed) of Basant is slow and serious nature (Gambhir). The appearance of Shuddha Madhyam is for magnifying the beauty of the raag. Including both Madhyams adds to the happiness with the same ang as in Lalat. Sohani, Paraj and Lalat are the closer ragas.

Raag Basant should not be expanded in mandra saptak, otherwise, one can see the shadow of raag Puriya in it. There is Shuddha Dhaivat in Puriya, however, the expansion of Basant should be in madhya and taar saptak. SM-G is the only place and only swar combination where Shuddha M is used.

In the next episode, we will think of some more raags.

Thank you !!!